सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning And Definition Of Social Change)

कुछ विद्वानो ने सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है तो कुछ ने सामाजिक सम्बन्धो में होने वाले परिवर्तन को। सम्पूर्ण समाज अथवा उसके किसी भी पक्ष में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को स्पष्टत. समझने के लिए हम विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी कुछ परिभाषाओं का यहाँ उल्लेख करेंगे—

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "समाजशास्त्री होने के नाते हमारी विशेष रुचि प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सम्बन्धों में है। केवल इन सामाजिक सम्बन्धों म होने वाले परिवर्तन का ही हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"[1] इस प्रकार मैकाइवर और पेज सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या शुद्ध समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण स करते हैं और सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तन की सज्ञा दत हैं क्योंकि समाज का ताना-बाना सामाजिक सम्बन्धो से ही तो बुना हुआ है।

किंग्सले डेविस ने भी सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या पूर्णत समाजशास्त्रीय ढग स की है। वे लिखते हैं, "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों का समझत हैं जो सामाजिक सगठन अर्थात् समाज क ढाँच और प्रकार्यों में घटित हात हैं।"[2] समाज की विभिन्न इकाइयाँ, जैस— संस्थाएँ, समुदाय, समितियाँ, समूह एवं प्रस्थितियाँ आदि मिलकर सामूहिक ढाँच का निर्माण करती हैं, इन इकाइयों के अलग-अलग प्रकार्य हैं। सामाजिक ढाँचा और उसकी इकाइयो क प्रकार्यों स सामाजिक सगठन का निर्माण हाता है। इस सामाजिक सगठन मे होन वाले परिवर्तन अर्थात् सामाजिक ढाँचे और प्रकार्य अथवा इन दानों में से किसी एक में होन वाल परिवर्तन का ही प्रा. डेविस सामाजिक परिवर्तन मानते हैं।

जेन्सन सामाजिक परिवर्तन की विस्तृत व्याख्या करते हैं। इसक अन्तर्गत मानव के व्यवहार एवं विचारों में होने वाल परिवर्तनों को भी सम्मिलित करत हैं। उन्ही के शब्दों में, "सामाजिक परिवर्तन का लागों क कार्य करन के तरीको में होने वाल रूपान्तरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"[3]

गिन्सबर्ग, जॉनसन, बॉटोमोर तथा रेमण्ड फर्थ आदि विद्वानो ने सामाजिक ढाँचे में हान वाल परिवर्तनों को ही सामाजिक परिवर्तन कहा है।

गिन्सबर्ग लिखते हैं, "सामाजिक परिवर्तन से मेरा तात्पर्य सामाजिक ढाँचे मे परिवर्तन से है। उदाहरण के रूप में, समाज क आकार, उसके विभिन्न अगो की बनावट या सन्तुलन अथवा उसके सगठन के प्रकारो में होने वाल परिवर्तन से है।"[4]

जॉनसन के अनुसार, "अपने मूल अर्थ में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन है।"[5] जॉनसन न सामाजिक परिवर्तन को और अधिक स्पष्ट करते हुए सामाजिक मूल्यों, सस्थाओं, सम्प्रदाओं और पुरस्कारों, व्यक्तियों तथा उनकी अभिवृत्तियों एवं योग्यताओं में होने वाले परिवर्तन को भी सामाजिक परिवर्तन कहा है।

बॉटोमोर सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत उन परिवर्तनों को सम्मिलित करते हैं जो सामाजिक संरचना, सामाजिक संस्थाओं अथवा उनके पारस्परिक सम्बन्धों में घटित होते हैं।"[6]

गिलिन एवं गिलिन का मत है कि लोग जीवन जीने के लिए कुछ रीतियाँ अथवा विधियाँ अपनाते हैं जो समाज द्वारा मान्य होती हैं। यदि इन विधियों में परिवर्तन आता है तो उसे सामाजिक परिवर्तन कहा जायगा। गिलिन ने उन कारकों का भी उल्लेख किया है जो सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की अपनी परिभाषा सांस्कृतिक आधार पर की है। उन्हीं के शब्दों में, "सामाजिक परिवर्तन जीवन की स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तनों को कहते हैं, चाहे ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के परिवर्तन से हुए हों या सांस्कृतिक साधनों, जनसंख्या की रचना या विचारधारा के परिवर्तन से या प्रसार से अथवा समूह के भीतर ही आविष्कारों के फलस्वरूप हुए हों।"[1]

मैरिल तथा एल्ड्रिज का मत है कि मानव क्रियाओं (Human Actions) में होने वाले परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन हैं। मानवीय क्रियाएँ सदैव एक जैसी नहीं रहती हैं। हमारी क्रियाएँ हमारे पूर्वजों की क्रियाओं से भिन्न हैं। यही नहीं व्यक्ति की बचपन, युवावस्था एवं वृद्धावस्था की क्रियाओं में भी भिन्नता पायी जाती है। वे लिखते हैं, 'जब मानव व्यवहार बदलाव की प्रक्रिया में होता है तब हम उसी को दूसरे रूप में इस प्रकार कहते हैं कि सामाजिक परिवर्तन हो रहा है।"[2]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन उन परिवर्तनों को कहते हैं जो मानवीय सम्बन्धों, व्यवहारों, संस्थाओं, प्रथाओं, परिस्थितियों, कार्यविधियों, मूल्यों, सामाजिक संरचना एवं प्रकार्यों में होते हैं। सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत निम्नांकित तथ्यों को सम्मिलित किया जाता है—

(i) सामाजिक ढाँचे एवं प्रकार्य में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।
(ii) सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के व्यवहारों, विश्वासों एवं मूल्यों में परिवर्तन से न होकर समाज के सभी अथवा अधिकांश लोगों की जीवन-विधि में परिवर्तन से है।
(iii) सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध मानव के सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन से है।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ
(Characteristics Of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम यहाँ उसकी विशेषताओं का उल्लेख करेंगे —

(1) सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है (The nature of social change is social)—इसका अर्थ यह है कि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध किसी व्यक्ति-विशेष, समूह-विशेष, संस्था, जाति एवं प्रजाति तथा समिति में होने वाले परिवर्तन से नहीं है। इस प्रकार का परिवर्तन तो व्यक्तिवादी प्रकृति का होता है जबकि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध समुदाय एवं समाज में होने वाले परिवर्तन से है। इस सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक है न कि वैयक्तिक। समाज की किसी एक इकाई में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता।

1 Gillin and Gillin Cultural Sociology, p 561
2. "When human behaviour is in the process of modification, this is only other way of indicating that social change is occuring" — Merrill and Eldridge Culture and Society pp 512 513

(2) सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है (Social change is a universal phenomenon)— इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन एक सर्वव्यापी घटना है, यह सभी समाजों एवं सभी कालों में होता रहता है। मानव समाज के उत्पत्ति काल से लेकर आज तक इसमें अनेक परिवर्तन हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे। मानव इतिहास में कोई भी ऐसा समाज नहीं रहा जो परिवर्तन के दौर से न गुजरा हो और पूर्णत: स्थिर व स्थायी हो। कोई भी समाज परिवर्तन का अपवाद नहीं है। यह हो सकता है कि विभिन्न कालों एवं समाजों में परिवर्तन की प्रकृति, गति एवं स्वरूप में अन्तर हो।

(3) सामाजिक परिवर्तन अवश्यम्भावी एवं स्वाभाविक है (Social change is inevitable and natural)—प्रत्येक समाज में हमें अनिवार्य रूप से परिवर्तन दिखायी देता है और यह एक स्वाभाविक घटना है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और समाज भी प्रकृति का एक अंग होने के कारण परिवर्तन से कैसे बच सकता है। कई बार हम परिवर्तन का विरोध करते हैं, परिवर्तन के प्रति अनिच्छा प्रकट करते हैं, फिर भी परिवर्तन को रोक नहीं सकते। कभी ये परिवर्तन जान-बूझकर नियोजित रूप में लाये जाते हैं तो कभी स्वत: ही उत्पन्न होते हैं। मानव की आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर समाज में भी परिवर्तन होता है।

(4) सामाजिक परिवर्तनों की गति असमान तथा तुलनात्मक है (Speed of social change is unequal and comparative)— यद्यपि सामाजिक परिवर्तन सभी समाजों में पाया जाता है फिर भी सभी समाजों में इसकी गति असमान होती है। आदिम एवं पूर्व समाजों की तुलना में आधुनिक एवं पश्चिमी समाजों में परिवर्तन तीव्र गति से होता है। यही नहीं बल्कि एक ही समाज के विभिन्न अंगों में परिवर्तन की गति में भी असमानता पायी जाती है। भारत में ग्रामीण समाजों की तुलना में नगरीय समाजों में परिवर्तन शीघ्र आते हैं। परिवर्तन की असमान गति होने का कारण यह है कि प्रत्येक समाज में परिवर्तन लाने वाले कारक भिन्न-भिन्न हैं, सभी में समान कारणों से ही परिवर्तन नहीं आते। एक समाज में एक प्रकार के कारक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं तो दूसरे समाज में दूसरे प्रकार के। हम सामाजिक परिवर्तन की गति का अनुमान विभिन्न समाजों की परस्पर तुलना करके ही लगा सकते हैं।

परिवर्तन का देश, काल एवं परिस्थितियों से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक देश की तुलना में दूसरे देश में, एक समय की तुलना में दूसरे समय में तथा एक परिस्थिति की तुलना में दूसरी परिस्थिति में परिवर्तन की गति भिन्न होती है। भारत में वैदिक काल, अंग्रेजों के काल एवं आधुनिक काल में परिवर्तन समान गति से नहीं हुए हैं क्योंकि इन युगों की परिस्थितियों एवं परिवर्तनों के कारणों में बहुत अन्तर पाया गया है।

(5) सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है (Social change is a complex phenomenon)— चूँकि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध गुणात्मक परिवर्तनों (Qualitative changes) से है, जिनकी कि माप-तौल सम्भव नहीं है, अत: यह एक जटिल तथ्य है। हम किसी भौतिक वस्तु अथवा भौतिक संस्कृति में होने वाले परिवर्तन को माप-तौल के आधार पर प्रकट कर सकते हैं किन्तु सामाजिक मूल्यों, विचारों, विश्वासों, संस्थाओं एवं व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों को मीटर, गज एवं किलोग्राम की भाषा में नहीं माप सकते। अत: सरलता से ऐसे परिवर्तन

का रूप भी समझ म नहीं आता। सामाजिक परिवर्तन मे वृद्धि क साथ-साथ उसकी जटिलता में वृद्धि होती जाती है।

(6) सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है (Prediction of social change is not possible)— सामाजिक परिवर्तन क बार में निश्चित रूप स पूर्वानुमान लगाना कठिन है। अत उसक बार मे भविष्यवाणी नही की जा सकती। यह कहना बडा कठिन है कि औद्योगीकरण एव नगरीकरण क कारण भारत मे जाति-प्रथा, सयुक्त परिवार प्रणाली एव विवाह म कौन-कौन स परिवर्तन आयेंग। यह बताना भी कठिन है कि आगे चलकर लागों क विचारों, विश्वासों, मूल्यो, आदर्शों आदि में किस प्रकार क परिवर्तन आयेंगे। इसका यह तात्पर्य नही है कि हम सामाजिक परिवर्तन के बारे मे बिल्कुल ही अनुमान नही लगा सकते अथवा सामाजिक परिवर्तन का कोई नियम ही नही है। इसका सिर्फ यही अर्थ है कि कई बार आकस्मिक कारणो स भी परिवर्तन होते हैं जिनके बार मे सोचा भी नही जा सकता।

सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान
(Patterns Of Social Change)

विभिन्न क्षत्रा में एक विशिष्ट ढग का परिवर्तन देखन को मिलता है। मैकाइवर एव पेज न इस दृष्टि से सामाजिक परिवर्तन क तीन प्रमुख प्रतिमानो का उल्लख किया है—

प्रथम प्रतिमान— परिवर्तन का एक प्रतिमान यह है कि कई बार परिवर्तन यकायक हमार सामन प्रकट होते हैं। इस श्रेणी में हम आविष्कारो स उत्पन्न परिवर्तनों को रख सकते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन एक बार उत्पन्न होते हैं फिर भी वे आगे और भी परिवर्तन उत्पन्न करते रहत हैं क्योंकि इन आविष्कारों में समय-समय पर कई लोगों द्वारा सुधार किया जाता है। रेडियो, टेलीविजन, वायुयान और माटर, आदि के आविष्कारो के कारण उत्पन्न परिवर्तन कवल आकस्मिक नही वरन् गुणात्मक रूप स अनेक परिवर्तनों का जन्म देने वाल भी हैं। ये परिवर्तन तब तक होते रहते हैं जब तक किसी अच्छे एव नवीन उपकरण का आविष्कार नही हो जाता। इस प्रकार के परिवर्तन को रेखीय परिवर्तन (Linear change) कहते हैं क्योंकि ऐसे परिवर्तन की दिशा सीधी रेखा में होती है। प्रौद्योगिकी में परिवर्तन इसी प्रकार के परिवर्तन का स्पष्ट उदाहरण है। यही बात ज्ञान एव विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों के लिए भी सही है। इस प्रकार के परिवर्तन को यदि हम एक रेखा चित्र द्वारा प्रकट करें तो इसकी प्रवृत्ति सदैव एक दिशा में ऊपर जाती हुई प्रकट होती है

द्वितीय प्रतिमान—परिवर्तन का दूसरा प्रतिमान वह है जिसमें कुछ समय तक तो परिवर्तन ऊपर की ओर अथवा प्रगति की ओर होता है, किन्तु थोड़े समय बाद वह पुन. ह्रास की ओर अथवा नीचे की ओर हो सकता है। अन्य शब्दो में, परिवर्तन का दूसरा प्रतिमान वह है जिसमें परिवर्तन पहले ऊपर की ओर होता है और फिर नीचे की ओर। इसे हम उतार-चढ़ाव वाला अथवा तरंगीय (Wavelike) परिवर्तन कह सकते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन के कई उदाहरण दिये जा सकते हैं, जैसे जनसंख्या सम्बन्धी परिवर्तन एव आर्थिक क्रियाओं में होने वाले परिवर्तन। हम देखते हैं कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उन्नत और अवनत होते रहते हैं। व्यापारिक क्रियाएँ अन्ततः विकसित और अवनत होती रहती हैं। इस प्रकार प्रथम प्रकार के परिवर्तन में जहाँ इस